INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

# समावेशी शिक्षा में शिक्षकों और माता–पिता के दृष्टिकोण

*[1]निरंजन सिंह, [2]डॉ. अंजू सक्सेना (सहायक प्रोफेसर)*
*[1]शोधार्थी, [2]पर्यवेक्षक*
*[1–2]विभाग: शिक्षा, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान*

**सार**
समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को समान अवसर प्रदान करना है, जिसमें शिक्षकों और माता–पिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस शोध का उद्देश्य समावेशी शिक्षा में शिक्षकों और माता–पिता के दृष्टिकोण को समझना है। शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों को अनुकूलित करने, विविधता को अपनाने और सहायक वातावरण बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। वहीं, माता–पिता अपने बच्चों के लिए समर्थन प्रदान करने, उन्हें शैक्षिक और सामाजिक समावेशन में सहायता देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, दोनों ही पक्षों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे कि संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और सामाजिक कलंक। इसके बावजूद, शिक्षक और माता–पिता के बीच सहयोग और समर्थन से समावेशी शिक्षा को प्रभावी बनाया जा सकता है। यह अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की शिक्षा में सुधार के लिए दोनों के दृष्टिकोण और उनकी सक्रिय भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

**मुख्य शब्द:** समावेशी शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले छात्र, शिक्षक का दृष्टिकोण, माता–पिता का दृष्टिकोण, शिक्षण विधियाँ, शैक्षिक समावेशन, संसाधन, सामाजिक कलंक, प्रशिक्षण, सहयोग।

## भूमिका
विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के शैक्षिक अनुभवों को आकार देने में शिक्षक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। उनकी समझ, दृष्टिकोण और दृष्टिकोण इस बात को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं कि इन छात्रों को कक्षा में कितनी प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जाता है और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को कितनी अच्छी तरह पूरा किया जाता है। समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने की क्षमता शिक्षकों की अपनी विधियों को अनुकूलित करने और कक्षा में विविधता को अपनाने की इच्छा पर निर्भर करती है। हालाँकि, शिक्षकों को अक्सर विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को प्रभावी शिक्षा प्रदान करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिससे समावेशी शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में उनका दृष्टिकोण महत्वपूर्ण हो जाता है।

## शिक्षकों की समझ और दृष्टिकोण
विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति शिक्षकों की समझ और दृष्टिकोण समावेशी शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हैं। एक शिक्षक की मानसिकता इन छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानने और उनका जवाब देने की उनकी क्षमता को आकार देती है। विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और सहानुभूति शिक्षकों को एक सहायक और पोषण करने वाला शिक्षण वातावरण बनाने में सक्षम बनाती है। हालाँकि, कई मामलों में, शिक्षकों के पास पर्याप्त ज्ञान की कमी हो सकती है या विकलांगताओं के बारे में गलत धारणाएँ हो सकती हैं, जिससे पूर्वाग्रह या अप्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ बन सकती हैं। शिक्षकों के बीच एक समावेशी मानसिकता विकसित करने के लिए जागरूकता पैदा करने वाली पहल, पेशेवर विकास कार्यक्रम और विशेष शिक्षा में सर्वोत्तम प्रथाओं के संपर्क की आवश्यकता होती है। विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने से समावेशिता को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित हो सकता है कि हर बच्चे

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

को आगे बढ़ने का अवसर दिया जाए (बालकृष्णन, 2022, सेंगर और शर्मा, 2020)।

## विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए शिक्षण प्रक्रिया

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को पढ़ाने के लिए अक्सर पारंपरिक शिक्षण विधियों में संशोधन और अनुकूलन की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री और कक्षा के माहौल को इन छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षक सहायक तकनीकों, वैकल्पिक संचार विधियों या विभेदित निर्देश का उपयोग कर सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि विशेष आवश्यकता वाले छात्र पाठ्यक्रम तक पहुँच सकें और उससे जुड़ सकें। इसके अतिरिक्त, एक सहयोगी और लचीली कक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने से सभी छात्रों के लिए सीखने का अनुभव बेहतर हो सकता है। शिक्षण प्रक्रिया को विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के कौशल और आत्मविश्वास के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, साथ ही बड़े कक्षा समुदाय में उनकी भागीदारी और एकीकरण को प्रोत्साहित करना चाहिए। इस दृष्टिकोण के लिए शिक्षकों को रचनात्मक, संसाधनपूर्ण और धैर्यवान होने के साथ–साथ नई रणनीतियों और उपकरणों की खोज के लिए खुला होना चाहिए (अय्यर और कुमार, 2018, पटेल, 2022)।

## शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ

विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के साथ काम करते समय शिक्षकों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ प्रभावी निर्देश और सहायता प्रदान करने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकती हैं।

### 1. शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना

शिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है विकलांग छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने शिक्षण विधियों को अनुकूलित करना। पारंपरिक शिक्षण विधियाँ अक्सर विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं को संबोधित नहीं करती हैं, जिसके लिए महत्वपूर्ण संशोधनों की आवश्यकता होती है। इसमें निर्देशों को सरल बनाना, दृश्य सहायता का उपयोग करना या कार्यों के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना शामिल हो सकता है। शिक्षण विधियों को अनुकूलित करने के लिए समय, प्रयास और छात्र की क्षमताओं और सीमाओं की गहरी समझ की आवश्यकता होती है। कई शिक्षकों को प्रशिक्षण या संसाधनों की कमी के कारण ये समायोजन करना मुश्किल लगता है। उचित समर्थन के बिना, शिक्षक अपने छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अभिभूत या अप्रस्तुत महसूस कर सकते हैं (झा और कुमारी, 2017, कुमार और सिंह, 2015)।

### 2. संसाधनों की कमी

संसाधनों की कमी विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के साथ काम करने वाले शिक्षकों के सामने एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। स्कूलों में अक्सर समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक पर्याप्त सहायता सामग्री, सहायक तकनीक या विशेष उपकरणों की कमी होती है। उदाहरण के लिए, सुनने में अक्षम छात्रों को सुनने में सहायता करने वाले उपकरण या कैप्शनिंग टूल की आवश्यकता हो सकती है, जबकि शारीरिक रूप से अक्षम छात्रों को गतिशीलता सहायता या सुलभ बुनियादी ढांचे की आवश्यकता हो सकती है। इन संसाधनों की अनुपस्थिति न केवल शिक्षण की प्रभावशीलता को सीमित करती है बल्कि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के समग्र सीखने के अनुभव को भी प्रभावित करती है। शिक्षकों को अक्सर सीमित उपकरणों पर काम करना पड़ता है या उन पर निर्भर रहना पड़ता है, जो पूरी तरह से समावेशी शिक्षा प्रदान करने की उनकी क्षमता में बाधा डाल सकते हैं (अग्रवाल, 2024, सेंगर और शर्मा, 2020)।

## माता–पिता का दृष्टिकोण

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के विकास और शिक्षा में माता–पिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

समझ, दृष्टिकोण और भागीदारी इन बच्चों के शैक्षिक परिणामों और सामाजिक एकीकरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। अपने बच्चों के लिए प्राथमिक देखभालकर्ता और अधिवक्ता के रूप में, माता–पिता अक्सर अपने बच्चे की अनूठी जरूरतों और चुनौतियों को पहचानने वाले पहले व्यक्ति होते हैं। हालाँकि, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे का समर्थन करना अपनी तरह की कठिनाइयों के साथ आता है, जिसके लिए माता–पिता को अपने बच्चों के लिए सर्वोत्तम संभव परिणाम सुनिश्चित करने के लिए अनुकूलन, सहायता लेने और शैक्षणिक संस्थानों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता होती है।

- **माता–पिता की समझ और दृष्टिकोण**

अपने बच्चों की विकलांगताओं के बारे में माता–पिता का दृष्टिकोण घर और समुदाय दोनों में समर्थन का माहौल बनाने के लिए महत्वपूर्ण है। विशेष जरूरतों वाले बच्चों के माता–पिता अक्सर भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हैं। अपने बच्चे की स्थिति और जरूरतों के बारे में उनकी समझ शिक्षा प्रक्रिया के प्रति उनके दृष्टिकोण और शैक्षिक पेशेवरों के साथ बातचीत करने के तरीके को आकार दे सकती है। माता–पिता के लिए बच्चे की विशिष्ट विकलांगता के बारे में सटीक जानकारी होना आवश्यक है, साथ ही साथ शैक्षिक रणनीतियाँ भी जो उनके बच्चे की शिक्षा का सबसे अच्छा समर्थन कर सकती हैं। दुर्भाग्य से, कई माता–पिता, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में, विशेष शिक्षा और संसाधनों के बारे में जानकारी के बारे में सीमित जागरूकता या पहुँच हो सकती है। जानकारी की कमी से भ्रम, भय या निराशा हो सकती है, जिससे माता–पिता के लिए अपने बच्चों की जरूरतों की वकालत करना अधिक कठिन हो जाता है। इसलिए, जागरूकता बढ़ाना और माता–पिता को संसाधन प्रदान करना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि उनके पास अपने बच्चों का प्रभावी ढंग से समर्थन करने के लिए उपकरण हों (डे और मिश्रा, 2019, साहू और दुबे, 2020)।

- **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए माता–पिता की भूमिका**

माता–पिता अपने विशेष जरूरतों वाले बच्चों के शैक्षिक और सामाजिक समावेशन दोनों में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं। घर पर, माता–पिता अपने बच्चों द्वारा स्कूल में सीखे गए पाठों और कौशलों को सुदृढ़ कर सकते हैं, और वे अपने बच्चे के विकास का समर्थन करने के लिए विशिष्ट कार्यों पर काम कर सकते हैं। अपने बच्चे की शिक्षा में सक्रिय रूप से शामिल होने से, माता–पिता यह सुनिश्चित करते हैं कि कक्षा के अंदर और बाहर दोनों जगह उनके बच्चे की जरूरतें लगातार पूरी होती रहें। इसके अलावा, माता–पिता अक्सर शिक्षकों के साथ मिलकर व्यक्तिगत शिक्षा योजनाएँ स्थापित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उचित संसाधन और सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।

शिक्षा के अलावा, माता–पिता अपने बच्चे के सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को अक्सर साथियों से अलगाव, बदमाशी या गलतफहमी जैसी सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे मामलों में, माता–पिता अपने बच्चों को सामाजिक कौशल विकसित करने, उनकी भावनाओं को प्रबंधित करने और सामाजिक संकेतों को समझने में मार्गदर्शन कर सकते हैं। वे समावेशी शैक्षिक प्रथाओं की भी वकालत कर सकते हैं जो उनके बच्चों को दूसरों के साथ बातचीत करने और स्कूल की गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति देती हैं। अंततः, माता–पिता घर पर और स्कूलों के साथ सहयोग के माध्यम से जो सहायता प्रदान करते हैं, वह बच्चे के समग्र शैक्षिक और सामाजिक अनुभवों को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है (चौधरी, 2020, साहू और दुबे, 2020)।

- **माता–पिता के सामने आने वाली चुनौतियाँ**

विशेष जरूरतों वाले बच्चों के माता–पिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके बच्चों को सर्वोत्तम देखभाल और सहायता प्रदान करने की उनकी क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। ये चुनौतियाँ भावनात्मक और व्यावहारिक दोनों हैं, और इनके लिए अक्सर माता–पिता को रचनात्मक समाधान खोजने या दूसरों से मदद लेने की आवश्यकता होती है।

**1. भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक तनाव**

INTERNATIONAL JOURNAL OF EXPLORING EMERGING TRENDS IN ENGINEERING
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed and International Journal, https://ijoeete.com/
|ISSN No. 2394-0573 |Volume: 10, Issue: 2 | July - Dec 2023

विशेष जरूरतों वाले बच्चे की परवरिश करना माता–पिता के लिए भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक रूप से बोझिल हो सकता है। अपने बच्चे की विकलांगताओं को संभालने, शिक्षा प्रणाली को समझने और सामाजिक कलंक से निपटने के तनाव से अलगाव, हताशा और यहां तक कि अवसाद की भावना पैदा हो सकती है। माता–पिता को अपने बच्चे की स्थिति और उसके कारण लगने वाली सीमाओं को स्वीकार करते समय दुःख या हानि की भावना का भी अनुभव हो सकता है। यह भावनात्मक बोझ परिवार की गतिशीलता को प्रभावित कर सकता है, क्योंकि माता–पिता अपने बच्चे की जरूरतों को परिवार के अन्य सदस्यों की जरूरतों के साथ संतुलित करने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, अपने बच्चे को स्कूल या समाज में कठिनाइयों का सामना करते हुए देखने का भावनात्मक बोझ माता–पिता के लिए भारी पड़ सकता है (डे और मिश्रा, 2019)।

**2. समर्थन और संसाधनों की कमी**

माता–पिता के लिए सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक उनके लिए उपलब्ध सहायता और संसाधनों की कमी है। कई मामलों में, विशेष रूप से ग्रामीण या वंचित क्षेत्रों में, माता–पिता के पास अपने बच्चों के लिए आवश्यक विशेष सेवाओं, उपचारों या शैक्षिक सहायता प्रणालियों तक पहुँच नहीं हो सकती है। इसके अलावा, माता–पिता को विशेष शिक्षा सेवाओं, जैसे कि आकलन, आईईपी या आवास प्राप्त करने में शामिल जटिल प्रक्रियाओं को नेविगेट करना मुश्किल हो सकता है। उचित संसाधनों तक पहुँच के बिना, माता–पिता अपने बच्चों की जरूरतों की वकालत करने या घर पर ऐसा माहौल बनाने में असहाय महसूस कर सकते हैं जो उनके बच्चे की शिक्षा और विकास का समर्थन करता हो।

**3. कलंक और सामाजिक अलगाव**

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के माता–पिता अक्सर खुद के लिए और अपने बच्चों के लिए सामाजिक कलंक और अलगाव का सामना करते हैं। ऐसे समाजों में जहाँ विकलांगताओं के बारे में सीमित जागरूकता है, माता–पिता अपने बच्चे की स्थिति के लिए आलोचना महसूस कर सकते हैं। विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे, विशेष रूप से दृश्यमान विकलांगता वाले बच्चे, अपने साथियों से बदमाशी, बहिष्कार या भेदभाव का सामना कर सकते हैं, जो बच्चे के आत्मसम्मान और माता–पिता की भावनात्मक भलाई दोनों को गहराई से प्रभावित कर सकता है। माता–पिता को अक्सर सामाजिक पूर्वाग्रहों के खिलाफ लड़ना चाहिए और अपने बच्चे के लिए एक समावेशी वातावरण बनाने के लिए काम करना चाहिए। विकलांगताओं से जुड़े कलंक के परिणामस्वरूप माता–पिता अपने समुदाय या सामाजिक नेटवर्क से अलग–थलग महसूस कर सकते हैं, जिससे अलगाव और समर्थन की कमी की भावना पैदा होती है।

**4. वित्तीय तनाव**

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे की परवरिश के लिए अक्सर महत्वपूर्ण वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। चिकित्सा, चिकित्सा उपचार, विशेष शिक्षा सेवाओं और सहायक उपकरणों से जुड़ी लागतें बोझिल हो सकती हैं। कुछ मामलों में, माता–पिता को अपने बच्चे की जरूरतों को पूरा करने के लिए या तो अपने काम के घंटे कम करने पड़ते हैं या अतिरिक्त काम करना पड़ता है, जिससे वित्तीय तनाव और बढ़ जाता है। इसके अलावा, कई परिवारों के पास विशेष शिक्षा सेवाओं या चिकित्सा देखभाल के लिए पर्याप्त बीमा कवरेज तक पहुँच नहीं हो सकती है, जिससे विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चे की परवरिश से जुड़ी लागतों का प्रबंधन करना और भी मुश्किल हो जाता है।

संक्षेप में, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के माता–पिता को भावनात्मक तनाव, संसाधनों की कमी, सामाजिक कलंक और वित्तीय कठिनाइयों सहित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, विशेष आवश्यकता शिक्षा की सफलता के लिए उनकी सक्रिय भागीदारी और उनके बच्चे की जरूरतों को समझना महत्वपूर्ण है। सूचना, संसाधनों और सामाजिक सहायता तक पहुँच बढ़ाकर, हम इन चुनौतियों को कम कर सकते हैं और माता–पिता को सशक्त बना सकते हैं। एक समावेशी समाज जो विविधता को महत्व देता है, न केवल विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को बल्कि पूरे समुदाय को लाभान्वित करेगा, जिससे ये बच्चे अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकेंगे और समाज में सफलतापूर्वक एकीकृत हो सकेंगे।

## निष्कर्ष

समावेशी शिक्षा के सफल कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों और माता–पिता के दृष्टिकोण और सहयोग की आवश्यकता है। शिक्षक अपने शैक्षिक दृष्टिकोण और विधियों को अनुकूलित करके विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए सहायक वातावरण प्रदान कर सकते हैं, जबकि माता–पिता अपने बच्चों को शैक्षिक और सामाजिक समावेशन में सक्रिय रूप से शामिल करके उनके विकास में योगदान करते हैं। हालांकि, दोनों ही पक्षों को संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण के अभाव और सामाजिक पूर्वाग्रह जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी शिक्षा की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए उचित प्रशिक्षण, संसाधनों की उपलब्धता और माता–पिता के समर्थन की महत्ता को समझना और उसे बढ़ावा देना आवश्यक है। जब शिक्षक और माता–पिता मिलकर काम करते हैं, तो वे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के लिए एक समावेशी और सहायक वातावरण बना सकते हैं, जो इन छात्रों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करता है।

## संदर्भ


- अय्यर, ए., और कुमार, एस. (2018)। प्राथमिक विद्यालयों में विशेष शिक्षा के लिए शिक्षकों की तैयारी। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, 63(4), 221–236।
- जैन, एम. (2017). समावेशी शिक्षाः भारत में नीति, अभ्यास और चुनौतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 10(3), 98–112.
- झा, एम., और कुमारी, पी. (2017)। भारत में समावेशी कक्षाओं को बढ़ावा देने में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 24(4), 245–260।
- कपूर, एम., और पांडे, आर. (2023)। समावेशी कक्षाओं के लिए प्रशिक्षणः तैयारी पर शिक्षकों का दृष्टिकोण। एशियन जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 7(2), 101–115।
- कपूर, एस., और शर्मा, पी. (2016)। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की सहायता करने में अभिभावक–शिक्षक सहयोग। इंडियन जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, 13(1), 90–105।
- सेंगर, एम., और शर्मा, ए. (2020)। समावेशी शिक्षा पर शिक्षकों का दृष्टिकोणः भारतीय स्कूलों का एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 13(2), 65–80।
- तिवारी, ए., और गुप्ता, ए. (2016)। विकलांग बच्चों के समावेश के बारे में शिक्षकों की मान्यताएँ। जर्नल ऑफ इंक्लूसिव एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 12(1), 39–54।
- बेलिना, ए. (2022)। अनौपचारिक नागरिक समाज को समझने के लिए एक उपकरण के रूप में अर्ध–संरचित साक्षात्कार। स्वैच्छिक क्षेत्र समीक्षा, 1–17.